विज्ञान साहित्य परिचय

• पुस्तक : विज्ञान कैलेंडर

लेखक : डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र
प्रकाशक : विज्ञान प्रसार ए-50, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201309 (उ. प्र.)
प्रकाशन वर्ष : 2013, मूल्य : 200 रुपए
ISBN : 978.81.7480.230.9

'विज्ञान कैलेंडर' के रूप में पाठकों के हाथ में एक महत्वपूर्ण किताब है। यह पुस्तक आधुनिक विज्ञान की कुछ उल्लेखनीय ऐतिहासिक घटनाओं को तिथि क्रम में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। वर्ष के 366 दिनों की विज्ञान से जुड़ी अहम् घटनाओं को समेटे हुए यह पुस्तक, विज्ञान में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए उपयोगी होगी। एक समीक्षक की दृष्टि से मैं आश्वस्त हूं कि पुस्तक से जुड़ा यह प्राथमिक तथ्य संदेहरहित है।

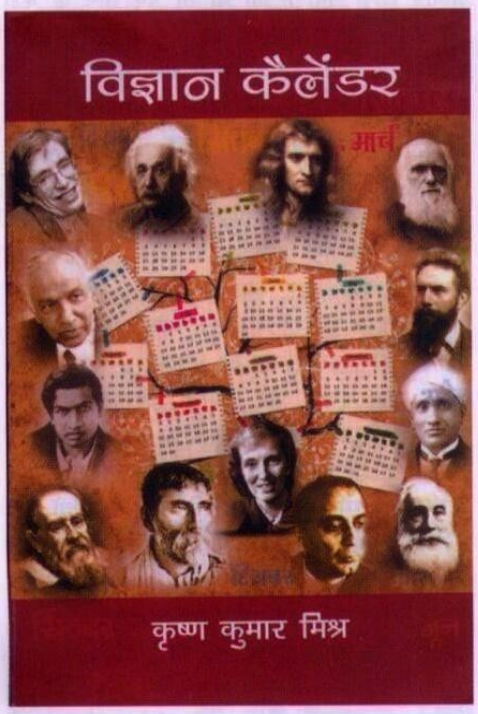

पुस्तक में वैज्ञानिकों के जन्म के अलावा उनकी मृत्यु की तिथियों के क्रम में विज्ञान की जानकारी को संक्षेप में बताया गया है। हर तिथि से जुड़े आधुनिक वैज्ञानिक और उसकी महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि के संबंध में लेखक द्वारा संक्षिप्त व सटीक जानकारी प्रस्तुत की गई है। इस कैलेंडर में भारत और विश्व की वैज्ञानिक विभूतियों को स्थान दिया गया है।

पिछले महीनों चर्चा में आए गॉड पार्टिकल/बोसॉन कणों की खोज में भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्र नाथ बोस की अहम् भूमिका को व्यापक रूप से रेखांकित किया गया था। संयोगवश इस पुस्तक में बोस की प्रविष्टि पहले नंबर पर लेखक द्वारा की गई है क्योंकि उनका जन्म 1 जनवरी 1897 को हुआ था। संकलित वैज्ञानिकों के जीवन, उनकी खोज तथा दुनिया पर परिलक्षित प्रभाव को लेखक ने कैसे कुछ पंक्तियों में समेटने का प्रयास किया है, इसे कुछ उदाहरणों की मदद से आइए देखें। सर्वप्रथम सत्येन्द्र नाथ बोस को ही लेते हैं। इस प्रविष्टि में लिखा है - "सत्येंद्र नाथ बोस भारत के प्रमुख गणितज्ञों तथा भौतिकी वैज्ञानिकों में से एक माने जाते हैं। इन्होंने अल्बर्ट आइन्स्टाइन के साथ प्रसिद्ध 'बोस-आइन्स्टाइन सांख्यिकी' का प्रतिपादन किया और क्वांटम सिद्धांत तथा प्लांक के 'कृष्णिका विकिरण' नियम के बारे में भी लिखा। आज ये क्वांटम भौतिकी की क्षेत्र में अनुसंधान के बुनियादी साधन हैं।"

चार्ल्स डार्विन (1809-1882) के संदर्भ में पुस्तक में शामिल प्रविष्टि देखें : "चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन महान अंग्रेज़ प्रकृतिविद् थे जिन्होंने विकासवाद का सुप्रसिद्ध सिद्धान्त दिया। इनकी दो अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं "ऑफन दि ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़ बाई मीन्स ऑफ नैचुरल सेलेक्शन" (1859) तथा "दि डीसेन्ट ऑफ मेन, ऐण्ड सेलेक्शन इन रिलेशन टु सेक्स"। उनके कार्यों ने जीव विज्ञान में युगान्तर प्रस्तुत किया तथा कई पुरानी धारणाओं को ध्वस्त कर दिया। वर्ष 2009 में दुनिया भर में उनकी दो सौवीं जयंती मनाई गई"।

इस पुस्तक में अनेक ऐसे वैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण खोजों व आविष्कारों का ज़िक्र किया गया है जिनकी विज्ञान जगत में अधिक चर्चा नहीं होती है। इसी श्रेणी में रॉबर्ट सी गैलो (23 मार्च 1937) का नाम आता है जिन्होंने 1984 में एड्स के वायरस ह्यूमन इम्यूनोडिफिशिएन्सी वायरस की खोज की।

समीक्षित संग्रह में हरगोविन्द खुराना, आनंद चक्रवर्ती, जी. एन. रामचंद्रन, बीरबल साहनी, होमी जहांगीर भाभा, श्रीनिवास रामानुजन, प्रशांतचंद्र महालनोबीस और मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया जैसे महान भारतीय वैज्ञानिकों तथा उनके महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अवदान के बारे में भी प्रमुखता से चर्चा की गई है।

कैलेंडर के माध्यम से विज्ञान को लोकप्रिय करने का लेखक ने एक अच्छा प्रयास किया है और इस पुस्तक को प्रकाशित कर विज्ञान प्रसार ने एक सराहनीय कार्य किया है। समाज के हर वर्ग में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करने के विज्ञान प्रसार के अभियान की एक अहम् कड़ी के रूप में इस पुस्तक को देखना चाहिए। यह रचना न सिर्फ, विद्यार्थियों, शिक्षकों के लिए बल्कि जन सामान्य, विद्यालय, पुस्तकालय, शोधार्थियों, विज्ञान संचारकों तथा पत्रकारों के लिए भी अति आवश्यक रेडी रिफरेंस साबित होगी।

इस श्रम साध्य रचना को लिखने में लेखक की साधना और विज्ञान लोकप्रियकरण की ललक की स्पष्ट झलक मिलती है। मेरा एक सुझाव यह है कि यदि इस पुस्तक के अंत में एक परिशिष्ट में वैज्ञानिकों के नाम (वर्णक्रम अनुसार) या विज्ञान के क्षेत्र के अनुसार व्यवस्थित किया जाता तो यह पुस्तक पाठकों के लिए ज्यादा उपयोगी होती।

मेरे ख्याल में अच्छे मुद्रण गुणवत्ता के साथ 421 पृष्ठों की इस पुस्तक की कीमत रुपए 200/- उपयुक्त है।

इस महत्वपूर्ण पुस्तक को लिखने के लिए इस पुस्तक के लेखक डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र तथा प्रकाशक विज्ञान प्रसार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं हैं।

• समीक्षक
श्रीमती किंकिणी दासगुप्ता मिश्रा
वैज्ञानिक 'ई'
विज्ञान प्रसार